मंथन के मोती

नारी सशक्तिकरण..... पारिवारिक/ सामाजिक हित में - पक्ष या विपक्ष

सुलेखा समिति की चतुर्थ प्रतियोगिता वाद विवाद लेखन प्रतियोगिता के रूप में 1 अक्टूबर 2017 को घोषित होकर 25 नवंबर 2017 को समाप्त हुई | 26 प्रदेशों से 90 प्रस्तुतियां आईं | समिति की नियमों के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के कारण ही निश्चित की गयी अवधि में प्रतियोगिता समापन सफलता पूर्वक संभव हो पता है | अनवरत चलने वाली प्रतियोगिताएं का क्रम इस बात का साक्षी है कि प्रदेश पदाधिकारी गण और समिति सदस्यों की राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा निर्देशित कार्यों को परिणिति तक पहुंचाने में कितनी गहन आस्था है | बौद्धिक चेतना को उद्वेलित कर सम-सामयिक विषयों पर चर्चा और चिंतन मनन के माध्यम से समाज में नव जागरण की एक छोटी सी कोशिश इस प्रतियोगिता श्रंखला का परम उद्देश्य है |

जीवन में अच्छाई संग बुराई, उजाले संग अँधेरा और दिन संग रात इन सब का होना ये इंगित करता है कि हर बात के दो पहलू होते हैं | साहित्य समाज का दर्पण होता है इसके माध्यम से समाज में पनप रही विचार धारा सबके सम्मुख पहुंचाने के प्रक्रिया वाद विवाद के ज़रिये की गयी है | पक्ष या विपक्ष देश, काल, परिस्थिति और परिवेश पर निर्भर करता है | इस ज्वलंत सामजिक विषय से आज देश की आधी आबादी के हित - अनहित जुड़े हुए हैं और इस विचार धारा के मध्य में बहुत महीन सीमा रेखा है | एक के लिए जो सही है वह दूसरे के लिए गलत हो सकता है | सही गलत का विचार और निर्णय हर एक का अपना होता है जिसे लेखिका ने लेखनी बद्ध किया और समिति के माध्यम से हमने जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया | इस मंथन प्रक्रिया में हमने उस विचार विश्लेषण को समझने का प्रयत्न किया है जो समाज में निहित होकर मानस को आंदोलित करती है |

पक्ष में कुछ लेखिकाओं ने सरकार द्वारा बनाये स्त्री हित के कानूनों का व्योरा दिया, महिला शिक्षा पर सभी ने ज़ोर दिया | पुरुष की सामंत वादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने पर बल दिया | प्राचीन काल में नारी कितनी स्वावलम्बी थी, इस पर सभी ने कमोवेश लिखा | एक दो ने ही सशक्तिकरण को ग्रामीण पिछले इलाके के कमज़ोर तबके से जोड़ कर लिखा और बताया कि उस तबके की स्त्रियों के सशक्त हुए बिना सशक्तिकरण की बात अधूरी है , आधुनिकता की वकालत सभी ने की, नारी के सवावलम्बी बनने पर भी ज़ोर दिया | कुछ ने अधिकारों के साथ कर्तव्य निर्वहन पर भी लिखा | नियमावली में बार बार लिखने की बावजूद कई लोगों ने समन्वयनात्मक तरीके से लिखा और इसीलिए प्रतियोगिता से बाहर हुए |

विपक्ष पर भी बहुत लोगों ने अच्छा लिखा | आधुनिक परिधान, अनावश्यक स्वतंत्रता, आधुनिक परिवेश को बिगड़ाव का कारण माना | अति हर चीज़ की बुरी होती है इस पर कई लोगों ने बहुत अच्छा लिखा | अति उच्च शिक्षा के बाद स्वावलम्बन और ज़रूरत न होने पर भी बाहर जाकर नौकरी करना और उससे आए अहम से पति पत्नी का आपसी टकराव होना, इस पर भी कई लोगों ने किंचित

आपत्ति उठायी | विवाहेतर संबंधों पर भी लेखनी उठी | बुज़ुर्गों और बच्चों की अनदेखी को भी नारी सशक्तिकरण से आयी उच्श्रंखलता से जोड़कर देखा गया | यहां भी कई प्रविष्टियां समन्वयात्मक तरीके से लिखने के कारण प्रतियोगिता से बाहर हुईं | एक दिलचस्प बात सामने आयी कि सुदूर कस्बों के लोगों ने तो विपक्ष पर खुल कर लिखा पर महानगरीय सभ्यता के पक्षधर विपक्ष पर लिखने से कतरा रहे थे |

एक विश्लेषण सामने आया कि जिस दिन नारी दूसरी नारी का सम्मान करना सीख जाएगी, नारी को उसके हिस्से का आसमान छूने की खुले मन से स्वतंत्रता मिल जाएगी, वैचारिक चिंतन करने की आज़ादी मिल जाएगी उसी दिन से सशक्तिकरण पूर्णता की ओर उन्मुख होने लगेगा |

भाषा कि अशुद्धियाँ, लेखक और प्रदेश का नाम न लिखा जाना एवं साफ प्रिंट न होना, ये कई कारण प्रविष्टि की जांच प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं | आप ही सोचिये नाम पता विहीन प्रविष्टि होने पर हम अंक किसे देंगे ? शब्द सीमा के कारण कई प्रविष्टि सर्वोत्तम की श्रेणी में होकर भी पीछे रह गयीं, उन में या तो 500 शब्द थे या 800 से भी ज़्यादा शब्द थे |

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व का विशेष आभार प्रकट करती है | समिति की कार्यप्रणाली पर उनका दृढ़ विश्वास ही प्रतियोगिताओं को सफलता के नए क्षितिज छूने को प्रेरित करता है | हमारे समाज की लेखन प्रतिभा की धनी उस नारी शक्ति को नमन जो अति व्यस्तता के बावजूद भी अपने विचारों को मूर्त रूप देकर, सुन्दर और व्यवस्थित तरीके से सबके समक्ष रख प्रतियोगिता को सफल बनाने में योगदान देती है |

अंत में सुलेखा समिति सदस्यों व हमारे निर्णायक मंडल का मैं विशेष धन्यवाद करती हूँ जिनके, महती प्रयासों और कार्य करने की अद्भुत क्षमता और लगन के फल स्वरुप प्रतियोगिता के निर्णय आप तक निश्चित समयावधि में पहुंच पातें हैं |

धन्यवाद

सुलेखा समिति प्रभारी- मंजू मानधना

दिल्ली